

2461. c. WEBER schlägt in Ind. St. 5, 248 vor परिशुष्यति st. परितुष्यति zu lesen.

2467. Auch MBh. 13, 364, b. 365, a.

2478. Lies Beherzten st. Klugen.

2494. Lautet VṚDDHA-KĀN. 6, 18: प्रत्युत्थानं च युद्धं च संविभागं च बन्धुषु । स्वय-
माक्रम्य भुञ्जीत शित्तेच्चवारि कुक्कुटात् ॥

2501. Vgl. Spruch 4893.

2504. = PAÑKAR. 1, 3, 15. d. स ते रत्नां करिष्यति.

2507. d. Vgl. MBh. 7, 429: पक्वानां हि वधे मृत वज्रायते तृणान्यपि.

2513. Auch nach 3, 33 eingeschoben. b. सत्कृतिम्. c. वन्द्यचरिता.

2519. BHARTR. 3, 27 lith. Ausg. III. c. अक्षस्फुरित.

2521. Aus dem BHĀMINIVILĀSA nach ÇKDr. u. प्रोत्फुल्लः. c. विधिवशाद्गमयति st.
प्रतिदिनं तपयति. d. करीलिकेषु st. च दैवयोगात्.

2525. = VṚDDHA-KĀN. 10, 7.

2526. ÇATAKĀV. 80. a. कार्यं धनैर् st. भिन्ना मुदो. b. ये चान्ये. d. मेरुर्न ज्ञानीमहे.

2535. = VṚDDHA-KĀN. 1, 13.

2539. ÇĀRṆG. PADDH. RĀGĀNĪTI 81 (74). a. पृष्ट[!] सत्यं न यो ब्रूयात् die eine, पृष्टे
हितमनो ब्रूयात् die andere Hdschr. b. परिणाम beide Hdschr. c. मत्वि (auch मत्वा) चे-
त्प्रियवक्ता (वेत्प्रियवक्ता) स्यात्. d. स st. च.

2534. = VṚDDHA-KĀN. 16, 3. b. मयि st. मम.

2570. Vgl. auch Spruch 4952.

2585. BHARTR. 2, 79 lith. Ausg. III. d. निश्चितार्था वि०.

2587. = MBh. 3, 13942. a. दृष्टम् st. राजन्. b. आङ्गुरश्चान् st. अस्य चाश्वाः. c. कुशलेः
ed. Calc., कुशली ed. Bomb.

2589. BHARTR. 3, 77 lith. Ausg. III. b. समासमगम.

2602. BHARTR. 2, 45 lith. Ausg. III. a. धेनुमनां.

2604. fg. Vgl. Spruch 4183. fg.

2615. = ÇUK. ed. Bomb. S. 24. b. परोन्नतिम् st. परा गतिम्. d. चन्दनो न निवर्धते.

2618. Vgl. Spruch 3404.

2621. = VṚDDHA-KĀN. 13, 8. a. धर्मिष्ठा. c. राजानमनु०.

2626. BHARTR. 3, 42 lith. Ausg. III. b. निमृताः प्रारब्धतस्तत्क्रियाः.

2629. ÇATAKĀV. 11. b. वह्नरीः. c. प्रातस्त्यो वहति प्रकामविकसद्वाजीव०.

2636. = PRASAṆGĀBH. 17, a. a. दुःखं st. तृष्णा. b. und c. wechseln die Stellen. b.
नीचानुसेवा st. खलेषु सेवा. c. शंसा st. पूजा.

2637. = KĀN. 16 bei WEBER. VṚDDHA-KĀN. 3, 8. 8, 21 (d. Ein Mal किंप्रकः).